इलाहाबाद विश्वविद्यालय

QUOT RAMI TOT ARBORES

यावत्यः शाखास्तावन्तो वृक्षाः

राष्ट्रीय संगोष्ठी

23-24 अक्टूबर 2024

'कर्बला' और 'रंगभूमि' के सौ साल

आयोजक

हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

IQAC, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

हिन्दी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

इस विभाग की स्थापना सन् 1924 ई. में हुई थी। हिन्दी भाषा और साहित्य के गम्भीर अध्येता डॉ. धीरेन्द्र वर्मा इस विभाग के संस्थापक अध्यक्ष थे। यह विभाग अपने अध्यापकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों की प्रतिभा, ज्ञान एवं उपलब्धियों से देश भर में प्रतिष्ठा का पात्र रहा है। देश भर में विश्वविद्यालय स्तर पर हिन्दी शिक्षण के पाठ्यक्रम एवं स्वरूप निर्धारण में इस विभाग की केन्द्रीय भूमिका रही है। रचनात्मक लेखन एवं ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों में इस विभाग की उपलब्धियाँ स्वयंसिद्ध हैं। हिन्दी आलोचना, साहित्येतिहास लेखन एवं शोध के क्षेत्र में डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, डॉ. रामकुमार वर्मा, डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा, डॉ. पारसनाथ तिवारी, डॉ. रघुवंश, डॉ. कामिल बुल्के, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, डॉ. सत्यप्रकाश मिश्र, डॉ. दूधनाथ सिंह; भाषा विज्ञान के क्षेत्र में डॉ. उदयनारायण तिवारी, डॉ. रामसिंह तोमर, डॉ. हरदेव बाहरी; पाठ सम्पादन के क्षेत्र में डॉ. माता प्रसाद गुप्त, तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में डॉ. मोहन अवस्थी, नाटक-एकांकी के क्षेत्र में डॉ. रामकुमार वर्मा, नई कविता के क्षेत्र में डॉ. जगदीश गुप्त और समकालीन कविता के क्षेत्र में डॉ. राजेन्द्र कुमार आदि का योगदान हिन्दी की अकादमिक दुनिया में कीर्तिस्तम्भ के रूप में सर्वस्वीकृत है। रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में भी इस विभाग के अध्यापकों एवं विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ महनीय हैं। शमशेर बहादुर सिंह, दुष्यन्त कुमार, कमलेश्वर, मार्कंडेय, धर्मवीर भारती, ज्ञानरंजन, अब्दुल बिस्मिल्लाह जैसे लेखकों का इस विभाग से जुड़ाव रहा है। हिन्दी विभाग इस उन्नत एवं गौरवशाली परम्परा की स्मृतियों को संरक्षित रखते हुए मौजूदा समय में नवीन ज्ञान के सृजन एवं प्रसार के लिए कटिबद्ध है।

'कर्बला' और 'रंगभूमि' के सौ साल

प्रेमचन्द भारतीय नवजागरण और स्वाधीनता आन्दोलन के सबसे विश्वसनीय रचनाकार हैं। वे अपनी रचनाओं के ज़रिए भारत की खोज करने वाले और इस मुल्क की पहचान गढ़ने वाले लेखक हैं। भारतीय समाज की हजारों वर्षों की गतानुगतिकता, जातिप्रथा की अमानवीयता, धार्मिक वैमनस्य और साम्प्रदायिकता, गरीबी और बेगारी, स्त्रियों की दोयम स्थिति जैसे अनेक मुद्दे, उनके साहित्य के मूल सरोकार हैं। प्रेमचन्द अपने समय के सवालों से टकराते हैं और वैकल्पिक समाज की तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। कहना चाहिए कि स्वाधीनता आन्दोलन के दौर के वे मुद्दे और सवाल आज भी मौजूद हैं। उस संघर्षशील दौर के सपने आज भी अधूरे हैं। ऐसे में प्रेमचन्द का साहित्य आज भी हमारा मार्गदर्शक है। बेहतर मनुष्य और बेहतर दुनिया के विचार और स्वप्न को बचाए रखने के लिए वह आज भी हमारी ज़रूरत है।

यह संगोष्ठी प्रेमचन्द की दो प्रसिद्ध रचनाओं 'कर्बला' और 'रंगभूमि' के प्रकाशन के शताब्दी वर्ष में आयोजित है। 'कर्बला' का प्रकाशन 1924 तथा 'रंगभूमि' का प्रकाशन 1925 में हुआ था। सौवें वर्ष में इन दोनों कृतियों पर केन्द्रित इस आयोजन के बहुत स्पष्ट लक्ष्य हैं। पहला उद्देश्य यही है कि हम 1924-25 के भारत की ज़रूरत और उससे उपजी प्रेमचन्द की रचनात्मक बेचैनी से परिचित हो सकें जिनसे इन कृतियों का जन्म हुआ। निश्चय ही, यह केवल तात्कालिक ज़रूरत नहीं थी। एक का

आख्यान मध्ययुग का है तो दूसरे में लेखक का वर्त्तमान है। दोनों रचनाओं में वर्चस्वशाली शक्तियों की क्रूर चालाकियाँ और अनीतियाँ हैं तो दोनों रचनाओं में भयहीन होकर सत्य और विवेक के साथ अडिग रहने वाले पात्र भी हैं। कटुता, घृणा और हिंसा दोनों रचनाओं में हैं तो दोनों ही में सत्य, अहिंसा, करुणा और विवेक के उजास से भरी हुई मनुष्यता की आभा भी है।

प्रेमचन्द ने 1924-25 में 'शतरंज के खिलाड़ी', 'सवा सेर गेहूँ', 'डिक्री के रुपए' और 'मन्दिर और मस्जिद' जैसी कहानियाँ भी लिखीं। प्रश्न यह है कि इक्कीसवीं सदी के इन वर्षों में इन रचनाओं को क्यों और किस प्रकार पढ़ा जाए? पूँजी और उससे नियन्त्रित मौजूदा समाज व्यवस्था में विस्मरण और कुपाठ के खतरे बढ़ते जा रहे हैं। ऐसे में प्रेमचन्द को पढ़ना केवल अकादमिक खानापूर्ति के लिए नहीं, अपने विवेक की हिफाजत के लिए ज़रूरी है। 'कर्बला' और 'रंगभूमि' पर केन्द्रित यह आयोजन विवेक की हिफाजत की एक कोशिश ही है। उम्मीद है, यह संगोष्ठी प्रेमचन्द की प्रासंगिकता और उन्हें पढ़ने के तरीक़े नए सिरे से सामने लाने में सहायक होगी।

संगोष्ठी में निम्नलिखित विषयों पर बातचीत हो सकती है :

- 'कर्बला' और 1924 का भारत
- 'कर्बला' में इतिहास और गल्प
- गाँधी, प्रेमचन्द और 'कर्बला'
- 'कर्बला' की प्रासंगिकता
- सौ साल बाद 'शतरंज के खिलाड़ी', 'सवा सेर गेहूँ', 'डिक्री के रुपए' और 'मन्दिर और मस्ज़िद'
- प्रेमचन्द-साहित्य में औपनिवेशिक शासन के प्रतिरोध का स्वरूप और 'रंगभूमि'
- भारत में औद्योगीकरण की प्रक्रिया, भूमि का सवाल और 'रंगभूमि'
- 'रंगभूमि' और गाँधी दर्शन
- 'रंगभूमि' में जाति प्रश्न
- 'रंगभूमि' और 'चौगाने-हस्ती'
- प्रेमचन्द के उपन्यास साहित्य में 'रंगभूमि' का स्थान
- भारतीय लोकतन्त्र की चुनौतियाँ और प्रेमचन्द
- भारतीय कथा परम्परा और प्रेमचन्द

संगोष्ठी के लिए आलेख/शोधालेख 30 सितम्बर 2024 तक भेजे जा सकते हैं। सेमिनार के लिए पंजीयन शुल्क : विद्यार्थी - 300 रु., शोधार्थी - 600 रु., शिक्षक एवं अन्य प्रतिभागी - 900 रु.।

पंजीयन हेतु
QR कोड स्कैन करें

या

Google Form Link : **https://forms.gle/nkmTbEa4SHspMQ9PA** पर पंजीयन करें

सम्पर्क : 9934260232/9219578525/uoahindiseminar@gmail.com

संरक्षक

प्रो. संगीता श्रीवास्तव

कुलपति

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

अध्यक्ष

प्रो. लालसा यादव

विभागाध्यक्ष, हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

संयोजक

आशुतोष पार्थेश्वर

आचार्य, हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज